मूल असमीया पाठ	हिन्दी अनुवाद
नारदे सहिते ब्रह्मा बसिल तथात। करिला बाल्मीकि दुइरो पावे प्रणिपात॥ पाद्ये अर्घे गंधे धूपे पूजि महाऋषि। कृतांजलि हुया स्तुति बुलिला हरिषि॥21	नारद सहित ब्रह्मा ने आसन लिया। वाल्मीकि ने चरणों में प्रणिपात किया॥ पाद्य, अर्घ्य,गंध,धूप से सेवा ऋषि की। कृतांजलि होकर आनंद से स्तुति की॥21
सांफलिलो जन्म दुइरो देखिलो चरन। करियोक आज्ञा किबा साधो प्रयोजन॥ बाल्मीकिक ब्रह्मा पाछे बुलिला बचन। शुना महाऋषि मोर येन प्रयोजन॥22	सफल जन्म देखे जो दोनों के चरण। आज्ञा दें सिद्ध करूँ मैं क्या है प्रयोजन॥ वाल्मीकि को ब्रह्मा ने कहा यह वचन। सुनो तुम महाऋषि मेरा प्रयोजन॥22
बुलिला बचन येन क्रोंचक बधिते। सेहिमते रामायण करा एक चित्ते॥ दशरथ नृपतिर गृहे अयोध्यात। श्रीराम स्वरूपे हरि जन्मिला साक्षात॥23	बोले वचन जैसा क्रौंच बध करते। वैसे ही रामायण लिखो एकचित्त से॥ दशरथ का घर है अयोध्या की भूमि। रामरूप में हरि ने जन्म लिया वहीं॥23
नारदर मुखे कथा शुनिबा सकले। पाचे रामायण करिबाहा कौतुहले॥ युगे युगे तोमार कबिता प्रचारिब। ताके शुनि भणि लोके संसार तरिब॥24	सारी कथा सुन लो नारद के मुख से। फिर रामायण लिखना कुतूहल से॥ युगों तक इस काव्य का होगा प्रचार। उसे सुन-कह लोगों का होगा उद्धार॥24
नारदक पाचे बुलिलंत पितामह। रामर चरित्र किछु बाल्मीकित कह॥ एहि बुलि ब्रह्मा निजलोके गैला चलि॥ नारदत बाल्मीकि पुछिला कृतांजलि॥25	पितामह ने देवर्षि नारद से कहा। कहो कुछ वाल्मीकि से चरित्र राम का॥ ब्रह्मा निज लोक चले यह कहकर। नारद से पूछते कृतांजलि होकर॥25
केनमते रामायण करिबो आताइ। सिसब काहिनी सबे कहा मोर ठाइ॥ कोन कुले रामचंद्र हैबा उतपन। कोन देशे कोन कर्म्म करिबा शोभन॥26	किस प्रकार रामायण रचना करूँ। वे सारी कथाएँ मैं आपसे ही सुन लूँ॥ किस कुल में रामचन्द्र होंगे उत्पन्न। कौन से देश कर्म को करेंगे शोभन॥26
केनमते हैबा राम कोन प्रयोजने। सिसब कारण तुमि जानाहा आपोने॥ बोलंत नारदे शुनियोक महाऋषि। रामर चरित्रचय करोबो हरिषि॥27	कैसे होंगे राम उनका क्या प्रयोजन। आप ही जो जानते हैं वे सारे कारण॥ कहा नारद ने, सुनो तुम महाऋषि। कहूँ आपसे मैं राम चरित हरषि॥27

हैबंत इक्षाकु नामे राजा अयोध्यात।	होंगे इक्षाकु नामक राजा आयोध्या में।
दशरथ राजा सेहि कुले हैबा जात॥	जनम लेंगे दशरथ उसी कुल में॥
तान गृहे बिष्णु रामरूपे अवतरि।	रामरूपी विष्णु वहीं लेंगे अवतार।
हरिबा भूमिर भार राक्षस संहरि॥28	हरेंगे भूमिभार कर दैत्य संहार॥28
रामर चरित्रचय अमृत समान।	राम का चरित्र है अमृत के समान।
शुना अनुक्रमे ऋषि कहो बिद्यमान॥	सुनो अनुक्रम से देकर तुम ध्यान॥
अयोध्यात हैबा दशरथ नरेश्वर।	अयोद्धा में दशरथ का सुराज होगा।
पुत्र नहैबेक नव हाजार बत्सर॥29	नौ हजार वर्षों तक पुत्र नहीं होगा॥29
पुत्रर निमित्ते यज्ञ करिब अनेक।	पुत्र हेतु नाना यज्ञ करेंगे सम्पन्न।
तथापितो नृपतिर पुत्र नुहिबेक॥	तथापि राजा को पुत्र न होगा उत्पन्न॥
दुर्ब्बासात उपदेश पाया महामानी।	राजा दुर्वासा का उपदेश मानकर।
करिबा बिशिष्ट यज्ञ ऋष्यशृंग आनि॥30	करेंगे यज्ञ वे ऋष्यशृंग को लाकर॥30